# विजेता जागो- अप्रैल 2024

1. **निर्णय** - "बुराई करनेवालों के कारण क्रोध न करना, और अधर्म करनेवालों से डाह न करना। यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्गों पर चल; परमेश्वर उनको आदर देता है ताकि वह अधिकार पाए। संकट के समय में उनकी शक्ति है। धर्मी का उद्धार प्रभु की ओर से आता है। प्रभु उनकी सहायता करते हैं और उन्हें बचाते हैं" (भजन 37:1,34,39,40)।

2. **आराधना**- "हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं!!" (भजन 84:1) पुरुष अपने घरों के आध्यात्मिक अगुवे हैं और उन्हें एक उदाहरण स्थापित करने और आराधना के घर में अपने परिवारों के साथ रहने के लिए बुलाया गया है। परमेश्वर, मैं प्रार्थना करता हूं कि आपके लिए प्यार और अन्य विश्वासियों के साथ संगति करने में खुशी प्रत्येक मसीही विश्वासियों के हृदय को मजबूत करे।

3. **पद** - प्रभु के वचन की सही समझ एक सुखद और सामंजस्यपूर्ण वैवाहिक जीवन की ओर ले जाती है। नुस्खा इफिसियों 5:25 में पाया जाता है - "हे पतियों, तुम में से हर एक अपनी पत्नी से प्रेम करे, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया।" प्रभु, हमें हमारे स्वार्थ से मुक्त करो; हमें अपने प्रेम से ऐसे पुरुष बनाओ जो अपनी पत्नी से प्रेम करें।

4. **दिशा-निर्देश**-जीपीएस (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) हमें दिशा-निर्देश और पते ढूंढने में सहायता करता है और यह तेजी से लोकप्रिय हो गया है। और फिर भी बहुत से लोगों को अभी भी जीवन का अंतिम मार्ग खोजने की आवश्यकता है। अनन्त जीवन पाने के लिए बाइबल परमेश्वर का जीपीएस है। जानें इसका उपयोग कैसे करें. "तेरा वचन मेरे पांवों के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है" (भजन 119:105)।

5. **बस एक आवाज़ की दूरी पर**– "संकट के दिन मुझे पुकारो; मैं तुझे बचाऊंगा और तू मेरा आदर करेगा" (भजन 50:15)। जब हम अपनी असंभवताओं को परमेश्वर के सर्वशक्तिमान हाथ में सौंप देते हैं, तो वह कार्य करेगा। वह हमारे दुःख और चिंता को राहत और प्रशंसा के समय में बदलना चाहता है।

6. **स्तुति बलिदान** - "जो धन्यवाद का बलिदान चढ़ाता है, वह मेरा आदर करता है; और जो अपना मार्ग सीधा चलाता है, मैं उसे परमेश्वर का उद्धार दिखाऊंगा" (भजन 50:23)। परमेश्वर का समाधान देखने से पहले ही उसे धन्यवाद देना उसके प्रति हमारे प्रेम और विश्वास को मजबूत करेगा। परमेश्वर उन लोगों को लज्जित नहीं करेगा जो उसकी बाट जोहते हैं। (भजन 25:3)

7. **दया**-"दयालु बनो, जैसे तुम्हारा पिता दयालु है" (लूका 6:36)। जैसे परमेश्वर हमारे साथ व्यवहार करते हैं, वैसे ही हमें दूसरों के साथ व्यवहार करना चाहिए। यह रिश्तों को नवीन और मजबूत करने की कुंजी है। ऐसा इंसान बनो जो दूसरों को परमेश्वर की नज़र से देखता हो। वह उनसे प्रेम करता है और चाहता है कि हम उनके प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करें।

8. **प्रशासक**- "जब तक मैं वापस न आऊं, तब तक इसी से व्यापार करना" (लूका 19:13बी)। हमारी सारी संपत्ति हमें परमेश्वर द्वारा सौंपी गई है। हमें अच्छे और वफादार प्रशासकों के रूप में उसका आनंद लेना चाहिए, उसका उपयोग करना चाहिए और उसको परमेश्वर के राज्य में निवेश करना चाहिए।

9. **सम्मान** - हे पतियों, विचारशील बनो और अपनी पत्नी का सम्मान करो क्योंकि उसके पास भी जीवन के उपहार का उतना ही हिस्सा है जितना तुम्हारे पास है। आपकी एक साथ प्रार्थना करने में बाधा नहीं आनी चाहिए। जब आप अपनी पत्नी के लिए आशीष होते हैं, वैसे ही आप परमेश्वर का सम्मान करते हैं। (1पत. 3:7)

10. **परिवर्तन** - पवित्र आत्मा आपको यीशु मसीह की छवि में बदलने के लिए उत्सुक है, लेकिन आपके पास यह निर्णय लेने की शक्ति है कि पवित्र आत्मा का आपके जीवन पर कितना प्रभाव पड़ेगा। प्रार्थना करें कि आप अपने निर्माता को अपने जीवन में पर्याप्त स्थान दे सकें ताकि वह आपको उसकी छवि में बदल सके। (इफि. 5:18)

11. **प्रार्थना** - यहूदा द्वारा यीशु को धोखा दिए जाने से ठीक पहले, उन्होंने अपने शिष्यों और भविष्य के सभी विश्वासियों के लिए प्रार्थना की थी। (यूहन्ना 17:20) आज प्रार्थना करें कि अधिक लोग यीशु को अपने उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में पाएँ और प्रार्थना करें कि वह आपको अपने राज्य के लिए एक अच्छा राजदूत बनने में मदद करे।

12. **सहभागिता** - केवल लकड़ी के एक टुकड़े से आग जलाना असंभव है। आग जलाने के लिए आपको कई टुकड़ों की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, मसीह के अनुयायियों के रूप में हमें एक दूसरे की आवश्यकता है। साथी विश्वासियों के साथ आध्यात्मिक संगति पाने के अवसर के लिए प्रभु को धन्यवाद दें। (प्रेरितों 2:42)

13. **प्रार्थना का उत्तर** - यदि आप यीशु से अपने पड़ोसी को बचाने के लिए कहते हैं, तो सावधान रहें कि हमारा प्रभु आपको उसकी ओर से उससे मिलने जाने के लिए कह सकता है। आज उसे धन्यवाद दें कि आप, यीशु मसीह के अनुयायी के रूप में, उसके लौटने तक दुनिया में उसके हाथ और पैर के रूप में कार्य करने के योग्य पाए गए हैं। (यशा. 52:7)

14**. नेतृत्व करना** –हम पुरुषों को अपने परिवार का नेतृत्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। प्रार्थना करें कि मसीही पुरुष मसीह के स्थायी जीवन के प्रति समर्पण करना सीखें (यूहन्ना 15) और उनके जीवन को व्यक्तिगत ईमानदारी के सबसे छोटे मामलों में भी प्रवाहित होने देंगे ताकि उसकी महिमा के लिए हम निजी तौर पर और साथ ही सार्वजनिक रूप से उनके लिए उदाहरण के तौर पर अपने परिवारों का नेतृत्व कर सकें।

15. **प्रलोभन** -वे सभी आकृतियों और आकारों में आते हैं, जिसे हम "बड़े पाप" मानते हैं से लेकर जिसे कुछ लोग "छोटे पाप" कहते हैं। प्रार्थना करें कि आप महत्वहीन "छोटे झूठ" के प्रति भी उतने ही संवेदनशील रहें जितना कि अश्लील साहित्य और कॉर्पोरेट चोरी के प्रति। यीशु ने कहा: "जो थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में विश्वासयोग्य है, जो थोड़े में अन्यायी है, वह बहुत में अन्यायी है" (लूका 16:10)।

16. **चरित्र** - सच्चा चरित्र वह है जो हम वास्तव में निजी तौर पर हैं। निजी और सार्वजनिक रूप से सुसंगत रहने के लिए प्रार्थना करें ताकि आपका जीवन विभाजित न हो, बल्कि आप प्रभु की नजरों के लिए जिएं। परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा: "मेरे सामने चलो और सिद्ध (परिपक्व, पूर्ण) बनो" (उत्पत्ति 17:1)।

17. **चिंता करना** - बहुत से पुरुष चिंता करते हैं। जैसे-जैसे हम बेरोजगारी दर बढ़ते हुए देखते हैं, मुद्रास्फीति बढ़ती है, और जैसे-जैसे उम्र करीब आती है, डर पैदा होने लगता है। प्रार्थना करें कि आप अपने प्रदाता के रूप में प्रभु में दृढ़ विश्वास विकसित करें। कड़ी मेहनत करते हुए और अच्छी कार्य नीति और खर्च करने की

आदतों को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करते हुए, सबसे पहले परमेश्वर पर भरोसा रखें। (मत्ती 6:25-34)

18. **एक अच्छा नाम** -ईमानदारी और चरित्र समय के साथ बनते हैं लेकिन रातों-रात नष्ट हो सकते हैं। परमेश्वर ने आपके जीवन में जो निवेश किया है, उसे महत्व दें और उसकी रक्षा करें। प्रार्थना करें और एक "अच्छा नाम" बनाए रखने के लिए सतर्क रहें जिसका महत्व महान धन से कहीं अधिक है। (नीतिवचन 22:1)

19. **आचरण** -स्वर्गीय पिता, जब दुनिया में बहुत सारी नकारात्मक चीजें हैं तो आभारी होना कठिन है। तौभी तेरी इच्छा यह है कि मैं सब बातों में धन्यवाद करूं। इसलिए, चूँकि मैं मसीह के साथ एकता में हूँ, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप मुझे आभारी होने के लिए प्रेरित करें। मुझे आप पर भरोसा है कि आप मुझे मेरे रास्ते में आने वाली हर चीज़ को संभालने में सक्षम बनाएंगे। (1 थिस्स. 5:18)

20.**धैर्य** - हे परमेश्वर, मैं अक्सर धैर्यहीन हो जाता हूँ। मैं स्वीकार करता हूं कि अपनी अधीरता में मैंने अपने मानवीय प्रयासों से चीजों को चलाने की कोशिश की है लेकिन, अनिवार्य रूप से, मैं असफल हो जाता हूं। हालाँकि, आपका वचन मुझसे कहता है कि मुझे प्रार्थना करनी चाहिए और फिर बस आपकी इच्छा पूरी करनी चाहिए। कृपया मुझे अपनी आत्मा की अगुवाई में विश्वास के द्वारा साहसपूर्वक बाहर निकलने के लिए प्रेरित करें। (इब्रा. 10:35,36)

21. **उपयुक्त समय**- प्रिय परमेश्वर, कभी-कभी मैं जल्दी पहुंचता हूं और कभी-कभी देर से, लेकिन आप हमेशा समय पर होते हैं। अपनी आत्मा के द्वारा मेरी अगुवाई करो कि जब आप जाने को कहो तो जाऊँ, जब आप रुकने को कहो तो रुकूँ। हे प्रभु, मुझे आपके सही समय के साथ चलने में सक्षम बनाने के लिए धन्यवाद! (गला. 4:4)

22. **आराधना करने का आह्वान** - प्रिय परमेश्वर, ब्रह्मांड के संप्रभु शासक के रूप में, आप अकेले ही आराधना के योग्य हैं। मैं आप पर भरोसा करता हूं कि आप मुझे आत्मा और सच्चाई से आपकी आराधना करने में सक्षम बनाएंगे। मुझे न केवल अपने शब्दों से, बल्कि अपने कार्यों से भी आपकी आराधना करने के लिए प्रेरित करें। मुझे स्वेच्छा से, तुरंत और पूरी तरह से आपकी आत्मा के नेतृत्व का पालन करने की कृपा प्रदान करें। (मत्ती 2:1,2)

23. **क्रोध से धार्मिकता की ओर**- प्रिय परमेश्वर, मैं जहाँ भी जाता हूँ लोग क्रोधित होते हैं - जिनमें मैं भी शामिल हूँ। मैं समझता हूं कि मानवीय क्रोध कोई समाधान नहीं है। मैं क्रोध, गुस्सा और झुंझलाहट की अपनी मानवीय प्रतिक्रियाओं पर पश्चाताप करता हूं। मैं उन्हें यीशु के नाम से अस्वीकार करता हूँ। मुझे सभी नकारात्मकताओं के प्रति उचित प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करें। (याकूब 1:20)

24. **प्रभावशाली** - "एक धर्मी व्यक्ति की प्रभावी प्रार्थना बहुत कुछ हासिल कर सकती है" (याकूब 5:16बी)। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके कार्य में भाग लें। वह हमें इस बात के लिए प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित करता है कि उसकी आत्मा में हो कर हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए, इस बारे में मार्गदर्शन दे। वह ऐसी प्रार्थना सुनेगा!

25. **परमेश्वर का भय** -“उसी से और उसके माध्यम से और उसी के लिए सभी चीजें हैं। उसकी महिमा हमेशा के लिए बनी रहे। आमीन!" (रोमियों 11:36) जिस हद तक हम अपने आप को परमेश्वर के वचन में

डुबोते हैं हम उसकी शक्ति और पवित्रता के बारे में भी आश्चर्यचकित होंगे। परमेश्वर के प्रति भय और गहरे आदर को अनुमति दें ताकि आपको उसके प्रति पूर्ण समर्पण करने में मदद मिल सके।

26. **शत्रुओं से प्रेम** -"परन्तु मैं तुम से कहता हूं, अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो..." (मत्ती 5:44)। मानवीय दृष्टि से ऐसा करना असंभव है। लेकिन यीशु ने दिखाया कि ऐसा प्यार कैसे काम करता है। जब हम उससे जुड़ेंगे, तो उसकी शक्ति हमें परमेश्वर की इच्छा का पालन करने और अपने दुश्मनों से प्यार करने में सक्षम बनाएगी।

27. **धन**-“सावधान रहें और किसी भी प्रकार के लालच से बचे रहें; क्योंकि किसी के पास बहुतायत में होने पर भी उसका जीवन उसकी सम्पत्ति से नहीं बनता" (लूका 12:15)। कई बार विरासत के बंटवारे ने लालच के कारण भाइयों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया है। यीशु द्वारा बताई गई कहानी को आपके लिए भी एक चेतावनी बनने दें।

28. **स्वराज्य**-"कि तुम में से हर एक अपने शरीर को पवित्र और सम्माननीय ढंग से वश में करना सीखे..." (1 थिस्स. 4:4)। यीशु हमारे जैसे ही एक व्यक्ति थे लेकिन उन्होंने प्रलोभन पर विजय प्राप्त की क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के प्रति समर्पण कर दिया था। हम भी, स्वेच्छा से उसके प्रति समर्पण करके प्रलोभन के हमले का सामना कर सकते हैं और अपने आवेगों को नियंत्रित कर सकते हैं।

29. **विचार करें** -“परमेश्वर के काम पर विचार करो, क्योंकि जो कुछ उस ने मोड़ दिया है उसे कौन सीधा कर सकता है? समृद्धि के दिन तो प्रसन्न रहो, परन्तु विपत्ति के दिन विचार करो। परमेश्वर ने पहले को भी बनाया और दूसरे को भी...” (सभो. 7:14)। हमारे जीवन का अंतिम उद्देश्य परमेश्वर के लिए जीना है। इसलिए प्रार्थना करें कि चाहे कुछ भी हो, हमेशा उसके करीब रहें।

30. **युद्ध** -“आप युद्धों और लड़ाई की अफवाहों के बारे में सुन रहे होंगे। देखो, तुम भयभीत न हो, क्योंकि उन बातों का घटित होना अवश्य है, परन्तु उस तक अन्त नहीं” (मत्ती 24:6)। विश्व की घटनाएँ साबित करती हैं कि मसीह की वापसी निकट है। इसलिए, आइए हम अपने आने वाले प्रभु पर पहले से कहीं अधिक ध्यान केंद्रित करें और बहुत आनंद के साथ ईमानदारी से उनकी सेवा करें।